अस कछु समुझि परत रघुराया

अस कछु समुझि परत रघुराया
बिनु तव कृपा दयालु दास-हित मोह न छूटै माया ॥

जैसे कोइ इक दीन दुखित अति असन-हीन दुख पावै
चित्र कलपतरु कामधेनु गृह लिखे न बिपति नसावै

जब लगि नहिं निज हृदि प्रकास, अरु बिषय-आस मनमाहीं
तुलसिदास तब लगि जग-जोनि भ्रमत सपनेहुँ सुख नाहीं

https://www.bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/14869/title/as-kuchu-smju-part-raghuraaya

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |